भजन

तर्ज–चलो रे डोली उठाओं कहार

देखो रे खोल वाणी प्राणनाथ, धाम की यह सब सुध लाई
अब न रहो तुम झूठ को लाग, धाम की यह सुध लाई

1–लाये वचन धनी धाम से, कारण अपने साथ के
देखो रूहों तुम करके विचार ,कहते धनी पुकार
उठ बैठो तुम जाग,धाम की यह सब सुध लाई

2–तुम स्याने मेरे साथ जी, उठ खड़े रहो जाग
पाउं पकड़ कहे इन्द्रावती, जिन रहो विखे रस लाग
न लागे तुम्हे ये झूठा दाग,धाम की यह सब सुध लाई

3–जो सनमुख रहे अपने पिया के, धन धन वो कहलाएं
लाहा लेसी दोनों ठौर का, जाग जो इत जाएगें
है वो रूहों बड़े भाग ,धाम की यह सब सुध लाई